543758

क्रम संख्या........................

कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा 2024

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी ☐

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन बुधवार

दिनांक 13-03-2024

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15¼ को 16, 17½ को 18, 19¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांको की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	5
2	6	20	
3	6	21	
4	6	22	
5	2	23	
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	3	28	
11	3	29	
12	3	30	
13	3	31	
14	3	योग	
15	4	प्राप्त अंको का कुल योग (Round off)	
16	6	अंकों में	शब्दों में
17	6	80	अस्सी
18	4		

परीक्षक के हस्ताक्षर........... संकेतांक 2 5 3 3 0

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में बोर्ड द्वारा प्रदत्त 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 177/2024

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी :–
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - अ

उत्तर

(1.)

प्रश्न संख्या	उत्तर संख्या
(i)	(ब)
(ii)	(अ)
(iii)	~~(ब)~~ (द)
(iv)	(स)
(v)	(अ)
(vi)	(द)
(vii)	(स)
(viii)	(द)
(ix)	(स)
(x)	(ब)
(xi)	(द)
(xii)	(स)

12

उत्तर

(2)

1 (i) ~~विराम चिह्नों~~ लिपि

1 (ii) Skill (स्किल)

1 (iii) लक्षणा शब्द शक्ति

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	(iv)	अर्थव्यंजना शब्द शक्ति
1	(v)	विरोधाभास अलंकार
1	(vi)	छेकानुप्रास अलंकार / अनुप्रास अलंकार
5		
	उत्तर ③	
1	(i)	व्यक्ति को अपने जीवन में सफल होने के लिए उत्तम लक्ष्य निश्चित करना चाहिए।
1	(ii)	नयन का पर्यायवाची शब्द = आँख
1	(iii)	फल की प्राप्ति मूल (जड) को सींचने से अर्थात व्यक्ति को एक उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रयत्न करना चाहिए।
1	(iv)	अपेक्षा
1	(v)	ध्यान केन्द्रित करना।
1	(vi)	लक्ष्य निर्धारित करना।
6		
	उत्तर (क)	

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	(i)	कवि ने लोगों के अर्थात् औरों के सभी अभाव मिटाने की बात कही है।
1	(ii)	जीवन में खंडहर से महल बनाने हेतु कवि ने अदम्य विश्वास, संज्ञा भी इतनी व्यापक, इससे मुझसे अगणित प्राणी आ जाते हैं इसकी आवश्यकता पर बल दिया है।
1	(iii)	अदम्य व्यक्ति को देखकर प्रलय - मेघ भूचाल अर्थात् तेज आँधी-बरसात शर्माते हैं।
1	(iv)	जीवन में सुधार हेतु अपने आप पर विश्वास और कुछ कर दिखाने की हिम्मत महत्व अधिक बताया है।
1	(v)	कवि ने अपने आप को मजदूर मानकर धरती पर स्वर्ग बनाने की बात कही है।
1	(vi)	बादल का पर्यायवाची - मेघ
6		

खण्ड - ब

2	उ5	पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं।
	(i)	आंशिक पत्रकार (ii) पूर्ण पत्रकार (iii) परिपत्रकार
	(i)	आंशिक पत्रकार:- वह पत्रकार जो खबर के बारे में पूरी जानकारी न देकर महत्वपूर्ण तथ्य को बताता है।
	(ii)	पूर्ण पत्रकार:- वह पत्रकार जो घटनास्थल पर हुई एक-एक जानकारी को दर्शकों तक पहुँचाता है।
	(iii)	परिपत्रकार:- वह पत्रकार जो कुछ घटनाएँ दर्शकों तक पहुँचाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर

(6.) लेखक फणीश्वर नाथ रेणु जी ने 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर पहलवान लुट्टन सिंह की ढोलक लोगो में संजीवनी शक्ति का काम करती है रात की विभीषिका को केवल पहलवान की ढोलक ही ललकार सकती है भले ही ढोल में बुखार हटाने का या महामारी मिटाने का गुण नही था पर यह मरते हुए व्यक्ति भी ढोलक की आवाज सुनकर उन्हे कोई दर्द का एहसास नही होता उन्हे मृत्यु से भय नही लगता। इस प्रकार ढोलक ने अपनी ध्वनियों चट धा गिड़ धा - आजा भिड़ जा, चटाक् चट धा - उठाकर पटक दे आदि ध्वनियाँ गाँव वालो को प्रेरणा दे रही थी।

(7)

उत्तर

(7.) कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित 'बादल राग' कविता में बादलो को क्रांति का प्रतीक बताया है बादल के गरजने से पूँजीपति वर्ग, साहूकार आदि डरने लगते है क्योंकि उन्होने गरीबो का शोषण करके बड़े-बड़े घर बनाए है। उन्हे लगता है कि बादल के गरजने से सभी किसान क्रांति न कर ले अर्थात उनमें क्रांति की भावना उत्पन्न न हो जाए और गरीब किसान को बादल के गरजने से कोई भय नही होता है उनके पास गँवाने के लिए कुछ नही होता है बादल की गर्जना से उन्हे आशा रहती है कि

(2)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कोई उन्हे न्याय दिलाएगा।

उत्तर
(8) सिन्धु सभ्यता एक संपन्न सभ्यता है इसमे अनेक तरह से जीवन जीने के लिए असीमित साधन है सिंधु सभ्यता में कृषि भी होती थी वहां पर मिट्टी के बर्तन, वाहनो के साक्ष्य, आभूषण और खाद्य सामग्री के अलावा अनेक प्रकार की चीजे मिली है सिंधु सभ्यता की जनसंख्या लगभग पचासी हजार थी जो आज के महानगर को भी पार करता है सिंधु सभ्यता के मोहनजोदड़ो २०० हेक्टयर क्षेत्र में फैला हुआ है यहाँ पर बौद्ध स्तूप है जिसके ऊपर भिक्षुओ के चबूतरे बने हुए है स्तूप की लम्बाई ४० फुट, चौडाई २५ फुट और गहराई सात फुट है यहाँ पर याजक नरेश की मूर्ति, नृत्यिका की मूर्ति है जो दिल्ली संग्रहालय मे है यहाँ पर आठ स्नानगार है, १ महाकुंड है पर सिंधु सभ्यता मे कोई दिखावा नही किया उनके पास इतने साधन होने पर भी इन्हे ऐसा नही लगता इसलिए भव्यता के स्थान पर कला की भव्यता दिखाई देती है।

2

उत्तर
(9) 'जूझ' कहानी के लेखक के अनुसार दादा के जीवन शैली की दिनचर्या-

(i) लेखक आनन्द यादव के दादा गुस्से वाले और हिंसक स्वभाव के थे।

(ii) वह दिन भर बाजार में खुले साँड की तरह घूमते

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		रहते और कोई भी काम नही करते थे।
	(iii)	वह सारा काम लेखक से करवाते थे और खुद बाजार में सारा दिन रकमा बाई के यहाँ गुजारते।
	(iv)	पढाई की बात लेखक और उसकी माँ लेखक के पिता से करते तो वे जंगली सुअर की तरह गुरर्ता था।
2	(v)	उसे लेखक का पढना-लिखना अच्छा नही लगता था।
		खण्ड-स
		अथवा
	उत्तर (10.)	रघुवीर सहाय की 'कैमरे में बंद अपाहिज' के आधार पर कवि ने कैमरे में बंद अपाहिज की पीडा का वर्णन किया है कि किस तरह से रिपोर्टर उनसे बेतुके सवाल पूछकर उन्हे रोने के लिए मजबूर करते है रिपोर्टर उनसे पूछते है कि आप अपाहिज कैसे हुए? आपको अपाहिज होकर कैसा लग रहा है? आपका अपाहिजपन आपको दुःख देता है? और वह उन्हे अपनी पीडा लोगो को बताने के लिए कहता है उन्हे अपाहिज के दुख्ख से कोई लेना देना नही है उन्हे अपनी TRP टी·आर·पी बढने से मतलब है जिनसे उन्हे पैसे मिले। इतने सवाल के बावजूद भी अगर अपाहिज नही रोता है तो वह कैमरा मैन को कैमरा बंद करने को कहता है और अपाहिज से कहता है कि आपने सुनहरा मौका खो दिया है इस तरह संवदाता रिपोर्टर स्वंय संवेदनशील होते है वर्तमान में किसी को भी दूसरो की भावनाओ की कोई चिंता नही होती है सब
3		

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अपने बारे में सोचते है लोगो के दुःख से उन्हे कोई मतलब नही होता है सब स्वार्थी होते है।-

उत्तर
(11.) यह कथन जीजी ने लेखक से कहा कि 'हम इन्हे पानी नही देंगे तो इन्द्र भगवान हमे पानी कैसे देंगे?" जीजी को भगवान पर आस्था थी उसका मानना था कि जो चीज/वस्तु हमारे पास सीमित है और हम उसमे से कुछ दे दे तो भगवान भी हमे वो वस्तु देगा अर्थात् जब जीजी इंद्र सेना पर पानी फेंकती है जब पानी की कमी होने पर भी वह इंद्र सेना पर पानी फेंकती है यह जीजी की भगवान के प्रति श्रद्धा है वह पानी को फेंकेगी तभी तो भगवान उन्हे पानी देगा यह जीजी के मान्यता थी इसके भारत की संस्कृति का पता चलता है कि लोग संस्कृति को अभी भी निभाते है और भगवान पर आस्था रखते है।- जबकि लेखक इसको अंधविश्वास मानता था पर जीजी के प्रति प्रेम के कारण जीजी के कह अनुसार कार्य करता था।-

3

उत्तर
(12.) जूझ आत्मकथ्य के लेखक आनंद यादव जब बहुत मुश्किलो के बाद विद्यालय जाने लगा। तब मराठी के अध्यापक न.वा. सौंदलगेकर इतनी अच्छी तरह से कविता पढाते वे कविता को पढाते समय पूरी तरह से मग्न

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

हो जाते और उनका सुरीला गला उसमे लय, छंद आदि होने पर लेखक इतना प्रभावित हो गया कि उसे लगा कि कवि भी हाड-मास के बने होते है और मैं भी कवि बन सकता हूं पहले भैंस चराते उसको अकेलापन महसूस होता परन्तु अब कोई अकेलापन महसूस नहीं होता वह भैंस चराते-चराते फसलो पर, जंगली फूलो पर तुकबंदी करने लगा वह आसपास के दृश्य को देखकर कविता रच लेता इससे लेखक मे आत्मविश्वास आ गया कि वह कवि बन सकता है।

(3)

उत्तर
(13.) मुहनजोदडो ताम्र काल के शहरो में सबसे बडा है मोहनजोदडो का अर्थ है - मुर्दो का टीला। यह पाकिस्तान के पंजाब के प्रांत में सिंधु सभ्यता के निकट है मोहनजोदडो की खुदाई 1924 राखलदास बनर्जी ने जॉन मार्शल के निर्देशक पर की फिर आगे की खुदाई हरिल्स हेराल्ड ने की। जॉन मार्शल एक पुरातत्वेता है मुहनजोदो में पक्की ईटो का प्रयोग किया गया है यहाँ पर 700 कुएँ, 1 महाकुंड, 8 स्नानघर होने के कारण इसे जल सभ्यता भी कहते है यहाँ कृषि भी उपलब्ध थी यहाँ के लोग अनाज उगाते थे यहाँ की जनसंख्या महानगरो की सीमा को भी लाँघती है। यहाँ कि सभ्यता और संस्कृति में वर्तमान के लोग यहाँ पर घुमने आते है और इतिहास के बारे

(3)

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

में पूछते है। यहाँ की सभ्यता बहुत भव्य थी वर्तमान धड़कती जिंदगियो के प्रति पुरातात्विक जानकारी होनी चाहिए। वर्तमान के लोगो को इसकी जानकारी होनी चाहिए। और उनको इस पर खोज जारी रखनी चाहिए।

उत्तर (14) विशेष लेखन के क्षेत्र खेलो के बारे में पत्र-पत्रिका लिखने वालो को इनकी जानकारी होनी चाहिए।

(i) भाषा अत्यंत सरल है और पाठको को पढने पर समझ आनी चाहिए।

(ii) उल्टापिरामीड शैली में लिखना चाहिए

(iii) पत्र-पत्रिका लिखते समय ट्रिपल स्पेश रखना चाहिए एक पंक्ति में 12-13 शब्द ही होने चाहिए।

(iv) जिन खिलाड़ियो के बारे में लिख रहे है उनकी पूरी जानकारी होनी चाहिए कुछ ऐसा ना लिख दे जिनसे उनकी भावनाओ को ठेस पहुँचे।

3

(v) धर्म-विशेष पर नही होना चाहिए।

(vi) खेल के बारे में पूरी जानकारी हो

(vii) शब्दो की विभाजित नही होने देना चाहिए।

(ix) खिलाड़ियो के प्रतिभा के बारे में लिखे।

उ० (15) फणीश्वर नाथ रेणु

जन्म - 1921 मंदागिनी। (नेपाल)

फणीश्वर नाथ रेणु ने अनेक संघर्ष किए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

रचनाएँ - मैला आँचल, परती परिकथा, कितने चौराहे, जुलूस

प्रारम्भिक शिक्षा - नेपाल से प्राप्त की।-

उच्च शिक्षा - काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राप्त की।-

काल - आधुनिक काल

* साहित्यिक विशेषताएँ ः- इनकी रचनाओ मे इन्होने उचित छंदो और अलंकारो का प्रयोग किया है।-

(ii) इन्होने गद्य मे अपनी सारी रचनाएँ लिखी है।-

(iii) इनका मैला आँचल बहुत चर्चित हुआ है।-

(iv) इन्होने बिंबो का प्रयोग भी किया है।-

(v) इन्होने अपनी सभी रचनाओ मे भाषा सहज सरल प्रवाहमयी रखी है।-

(vi) इन्होने अपने शब्दो मे विशेष ध्यान दिया

(vii) इन्होने मुहावरे का प्रयोग किया है।

पुरस्कार - ज्ञानपीठ, सोवियत लैंड पुरस्कार

मृत्यु - 1977 में।-

5

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - द

उ.० (16) प्रसंग - कवि - हरिवंश राय बच्चन

कवि परिचय - हालावादी दर्शन के प्रणेता हरिवंश राय बच्चन का जन्म 1907 इलाहबाद और मृत्यु 2003 में हुई।

रचना - आत्मपरिचय

संदर्भ - प्रस्तुत पद्य हमारी हिन्दी पाठ्यपुस्तक कक्षा-12 के पाठ - 1 'आत्मपरिचय' से लिया गया है इसमे कवि हरिवंश राय बच्चन अपने दुःखो का वर्णन करते है।

व्याख्या :- कवि हरिवंश राय बच्चन कहते है कि मेरा हृदय प्रेम की वजह से जल रहा है मैं सुख और दुःख दोनो परिस्थितियो में बकुश रहता हूँ मैं भवसागर को पार कर लिया है मुझे प्रेम का संसार ही पसंद है जो मैने स्वंय बनाया है मैं प्रेम रूपी नाव से भवसागर को पार कर लेता हूँ इसके बावजूद भी मैं खुश रहता हू मैं जवानी की मौज-मस्ती करता हूँ मैं दुःख में भी हँसता रहता है यह दुःख मुझे बाहर से तो हँसाता है पर मेरा मन अंदर ही अंदर दुःखी होता है क्योकि मैं किसी अज्ञात व्यक्ति (पत्नी, प्रेयसी, माँ बहन, कोई भी) की याद में दुःखी होता रहता हूँ क्योकि वह मुझे छोड़कर इस संसार से चली गई

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

है जिसके कारण मुझे यह संसार अधूरा लगता है।

विशेष - भाषा - सहज सरल हिन्दी खड़ी बोली
रस - करुण रस, शांत रस
रीति - माधुर्य, पाँचाली
गुण - प्रसाद गुण, माधुर्य गुण
बिंब - दृश्य व श्रव्य
शैली - प्रतीकात्मक, वर्णात्मक, भावात्मक
शब्द शक्ति - अभिधा शब्द शक्ति
अलंकार - विरोधाभास अलंकार - जहाँ वास्तविक विरोध न होने पर भी विरोध का आभास हो।
उदा. - उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ।
अंत्यानुप्रास अलंकार, अनुप्रास अलंकार।
प्रस्तुत पद्य में कवि ने अपने दुःखों का वर्णन किया है।

6

BSER-177/2024

उत्तर
(17.) प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश हमारी कक्षा - 12 की पाठ्यपुस्तक आरोह-2 के 'भक्तिन' संस्मरण रेखाचित्र जिसकी रचयिता महादेवी वर्मा है उससे लिया गया है इसमे महादेवी वर्मा ने भक्तिन के बारे में वर्णन किया है।

व्याख्या - कवियत्री वर्णन करते हुए कहती है कि भक्तिन के प्रस्ताव को अस्वीकार न

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

देने के लिए कहा था पर उसके परिणाम ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया। भक्तिन ने परम रहस्य का उद्घाटन करने की मुद्रा बनाकर और पोपला मुँह मेरे कानों के पास लाकर बोला कि उसके पास पाँच बीसी और पाँच रूपया गडा रखा है उसी से वह उसका और कवियत्री का प्रबंध कर लेगी। फिर लड़ाई तो कुछ अमरौती खाकर आई नही है जब सब ठीक हो जाएगा, तब यही लौट आएंगे। भक्तिन की कँजूसी के प्राण पँजीभूत होते २ पर्वताकार बन चुके थे परन्तु इस उदारता के डाइनमाइट ने क्षण भर में उन्हे उड़ा दिया। अर्थात् भक्तिन के व्यवहार और उसकी कंजूसी के बारे में बताया गया है।

6

विशेष :- प्रस्तुत गंद्यांश की भाषा अत्यंत सरल व सरस है।

(ii) प्रस्तुत गद्य में उचित छंद, अलंकारो का प्रयोग किया है।

(iii) प्रस्तुत गंद्यांश में महदेवी वर्मा भक्तिन के स्वभाव और उसकी कँजूसी का वर्णन करती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	उत्तर	~~विज्ञप्ति~~
	18.	
4		कर्मचारी चयन बोर्ड, दिल्ली पत्रांक संख्या - क./च./बो./ /102-103./2023-24 दिनांक-13मार्च,2024 विज्ञप्ति कर्मचारी चयन बोर्ड, दिल्ली में विभिन्न पदो पर आवेदन आमंत्रित किए जा चुके है जिन्हे यह परीक्षा देनी है वह आवेदन को भर दे और समय पर जमा कराए परीक्षा यथावत उसी समय पर होगी। अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट डाउनलोड करे।- धन्यवाद Divya हस्ताक्षर दिव्या कँवर राठौड सचिव (कर्मचारी चयन बोर्ड दिल्ली)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर (19)

विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की महत्ता

प्रस्तावना :- भारत में अनेक विद्यालय है जिनमे विद्यार्थी अनुशासन से रहते है अनुशासन जीवन में होना बहुत जरूरी है कोई भी लक्ष्य पूरा करने के लिए अनुशासन का होना अनिवार्य है अनुशासन विद्यार्थी जीवन के लिए ही नही, अपितु सभी नागरिक के लिए जरूरी है।

विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व :- वैसे तो अनुशासन प्रत्येक नागरिक के लिए जरूरी है क्योंकि वह हमे जीवन जीने के सही तरीके को बताता है परन्तु विद्यार्थी के लिए अनुशासित रहना अति आवश्यक है जब तक विद्यार्थी अनुशासित नही होता तब तक विद्यालय में अध्यापको द्वारा सिखाए गए ज्ञान को वह अर्जित नही कर सकता है क्योंकि वह अगर अध्यापक की बात नही मानता है तो अध्यापक भी उस पर ध्यान नही देता है क्योंकि वह अनुशासनहीन और बदतमीजी करते है इसलिए जब तक विद्यार्थी अध्यापक की हर बात सुन नही लेता तब तक वह एक अच्छे विद्यार्थी के रूप में और जीवन में सफल नही हो सकेगा। इसलिए विद्यार्थियों को अनुशासन

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

में रहना चाहिए ।- अनुशासन का अर्थ ही है - सभी की बात को सुनकर उसका काम करना अर्थात् शांति से रहना ।-

वर्तमान में विद्यार्थी जीवन में अनुशासनहीनता - वर्तमान में सभी विद्यालयो में विद्यार्थी अनुशासन हीन हो रहे है वह विद्यालय मे बदतमीजी और अध्यापको की कोई बात नही सुनते है जिसके कारण अध्यापको ने उन पर ध्यान देना छोड दिया है। ऐसा ही रहा तो कोई भी बच्चा अपने जीवन में सफल नही हो पायेगा ।- अतः जीवन जीने के लिए अनुशासन बहुत जरूरी है अनुशासनहीन व्यक्ति सबकी नजरो में गिरा हुआ होता है।- जिसके कारण वह व्यक्ति अपने लक्ष्य तक नही पहुँच पाता है।-

उपसंहार - हमे भारतवासियो का यह कर्तव्य है कि हम स्वंय अनुशासन में रहकर सभी को अनुशासन का पाठ पढाया जाए ।- जिससे सभी का जीवन सुधर जाए और वह अपने लक्ष्य को पूरा कर पाए विशेषकर विद्यार्थियो को अनुशासन का पाठ उनके माता - पिता और घरवालो के द्वारा दिया जाता है जिससे बच्चे अनुशासन मे रहना, उठना

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		बैठना कर सके।-
		समाप्त

BSER-177 2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177-2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177-2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177-2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177 2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSEB-177-2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSLR-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSEB-17/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024